ew metadata, citation and similar papers at core.ac.uk
brought to you by CORE
provided by CMFRI Digital Reposit

कर्नाटक तट का गहराई मापन और चिंगटों का मौसमिक वितरण

ए.पी. दिनेशबाबु, के.ए. उण्णित्तान, बी. श्रीधरा और वाइ. मुनियप्पा
केंद्रीय समुद्री मत्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, मांगलूर अनुसंधान केंद्र, कर्नाटक
केंद्रीय समुद्री मत्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन, केरल

भूमिका

विश्व में उच्च दर की जलीय संपदाओं का सिंह भाग चिंगटों का योगदान है। विश्व के कुल चिंगट उत्पादन का प्रमुख योगदान भारत का है। क्रस्टेशियनों में अत्यंत स्वादिष्ट होने के नाते चिंगटों का उच्च निर्यात मूल्य हैता है और इस वजह से वाणिज्यिक रूप से विदोहन किए जाने वाले ग्रूपों में इसका प्रमुख स्थान है। उष्णकटिबंधीय क्षेत्र के अधिकाधिक देशों के समान भारत की चिंगट मात्स्यिकी में मुख्यतया दो प्रमुख वर्ग होते हैं पेनिआइड और करीडियन चिंगट। देश की विदेशी मुद्रा कमाने का मुख्य स्रोत और मिलियनों मछुआरों की आजीविका का उपाय होने की वजह से पेनिआइड चिंगट देश के समुद्री खाद्य उद्योग का आधार स्तंभ बन गया है। सभी प्रकार के चिंगट मानवीय खाद्य की दृष्टि से वाणिज्यिक प्रमुख है और ये जलीय खाद्य श्रृंखला का मुख्य घटक है। भारत विविध प्रकार के खाद्ययोग्य क्रस्टेशियनों से समृद्ध है जिन में अधिक जातियाँ प्राचीन काल से ही वाणिज्यिक मात्स्यिकी में प्रमुख हैं। अब वाणिज्यिक पकड में कुल 117 चिंगट जातियाँ नियमित रूप से या कभी कभी मिलती हैं। अधिकांश चिंगटों की अतिजीवितता में नदीमुखों और पश्च जालों की मुख्य भूमिका होती है ये कई चिंगटों का आवास स्थान और पालन या प्रजनन क्षेत्र भी है। भारत की नदीमुख व्यवस्थाओं में लगभग 70 चिंगट और झींगा जातियाँ हैं जिन में 28 जातियाँ प्रेनिआइड चिंगट, 4 जातियाँ सेर्जेस्टिड चिंगट और 25 जातियाँ करीडियन चिंगट हैं। समुद्री मात्स्यिकी सेक्टर में हुए प्रौद्योगिकी विकास से गहरे समुद्र तक मात्स्यिकी विस्तृत हो गयी है। इस के परिणाम स्वरूप हर वर्ष विदोहन किए जाने वाले चिंगटों में कई अपरंपरागत चिंगट भी जोडे जाते हैं। इस लेख में गहराई और चिंगटों की उपस्थिति के मौसम के प्रसंग में कर्नाटक तट की चिंगट संपदाओं के वितरण

सारणी 1 कर्नाटक तट की चिंगट संपदाओं के विदोहन एवं मौसमिक वितरण

जाति	गिअर	उपस्थिति का क्षेत्र	मौसम
मेटापेनिअस डोबसोनी	कोष संपाश	पूरे तट पर	सितंबर-जनवरी
-वही-	आनाय	पूरे तट पर	नवंबर में अधिक और अप्रैल
-वही-	वलय संपाश	पूरे तट पर	जून-अगस्त
परापेनिओप्सिस स्टाइलिफेश	आनाय	पूरे तट पर	नवंबर में अधिक और अप्रैल
मेटापेनिअस मोनोसिरस	आनाय	पूरे तट पर	दिसंबर-मई
फेन्नरोपेनिअस इंडिकस	आनाय	पूरे तट पर	नवंबर में अधिक और अप्रैल
-वही-	वलय संपाश	पूरे तट पर	जून-अगस्त
मेलिसेर्टस कनालिकुलेटस	आनाय	पूरे तट पर	सितंबर-मई
पेनिअस सेमीसलकेप्स	आनाय	पूरे तट पर	सितंबर-मई
पेनिअस मोनोडोन	आनाय	पूरे तट पर	सितंबर-मई
फेन्नरोपेनिअस मेरग्विएन्सिस	आनाय	पूरे तट पर	कभी कभी
सोलेनोसीरा चोप्रै	आनाय	पूरे तट पर	सितंबर मई
पेनिअस लोंगिपेस	आनाय	पूरे तट पर	सितंबर मई
परापेनिअस फिसुरोइडस इन्डिसिस	आनाय	मांगलूर	जनवरी माई
ट्रकिसलाम्ब्रिया जाति	आनाय	पूरे तट पर	सितंबर मई
मेटापेनिअस मोयेबी	आनाय	पूरे तट पर	कभी कभी
परापेनिशोप्सिस अक्लिवाइडोस्ट्रिस	आनाय	पूरे तट पर	कभी कभी
अरिस्टियस अलकोकी	आनाय	केरल और कर्नाटक	सितंबर मई
हेटरोकार्पस जाति	आनाय	केरल और कर्नाटक	सितंबर मई
प्लेस्योनिका जाति	आनाय	केरल और कर्नाटक	सितंबर मई
असेटस जाति	आनाय	पूरे तट पर	सितंबर-नवंबर

पर प्रकाश डाला जाता है।

सामग्रियाँ एवं तरीके

कर्नाटक की वाणिज्यिक पकड से वर्ष 2001-2007 के दौरान समुद्री चिंगटों का संग्रहण किया गया। इसके बाद वर्ष 2006 में आठ प्रमुख नदीमुखों, उत्तर के काली नदीमुख से दक्षिण के नेत्रावती-गुरुपूर नदीमुख, पांच द्वीपों, उत्तर के कुरुमगाड द्वीप एवं दक्षिण के सेन्ट मेरीस द्वीप और कार्नाटक की पूरी तटरेखा के दस अंतरा-ज्वारीय क्षेत्रों में व्यापक रूप से सर्वेक्षण किया गया। नदीमुखों से कास्ट जाल और ड्राग जाल द्वारा नमूनों का संग्रहण किया गया। नदीमुख में मत्स्यन करने वाले मछुआरों से गिल जाल और फंदा युक्त जाल की पकड और स्थानीय बाज़ारों से प्राप्त नमूनों को भी उपयुक्त किया गया। मानक संदर्भ उपयुक्त करके नमूनों की पहचान की गयी। इसके अतिरिक्त पहचान के लिए वेब की संपदाओं (उदाः http://www.itis.gov) का भी उपयोग किया गया।

कडलमीन TM cadalmin

चित्र 1 कर्नाटक तट की झींगा/चिंगट संपदाओं का गहराई वार वितरण

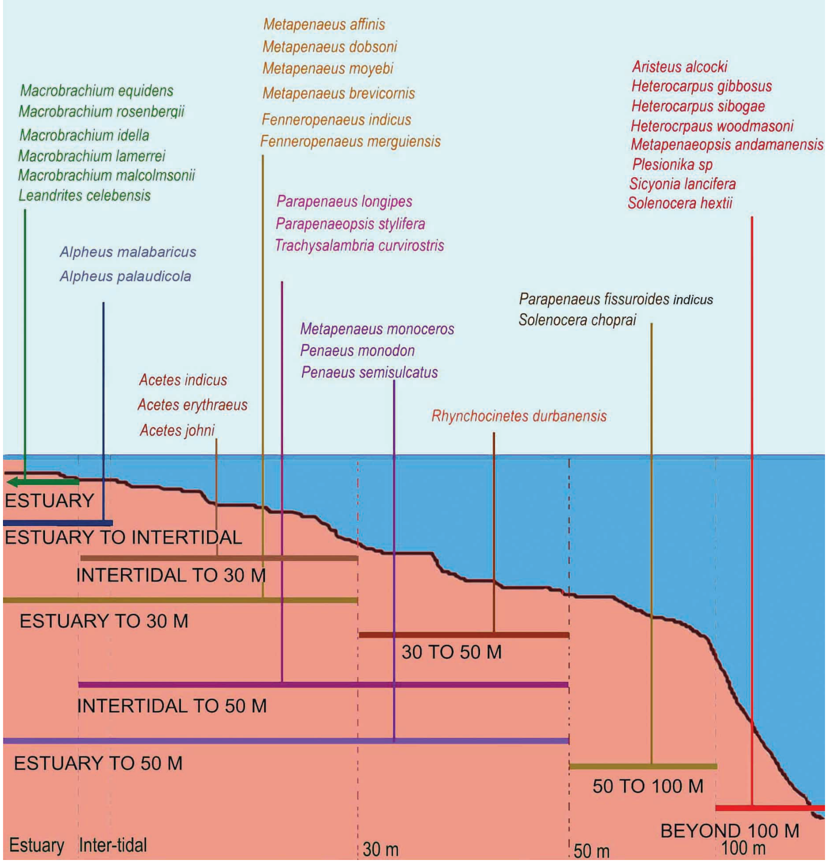

कर्विरोस्ट्रिस चिंगट मात्स्यिकी की प्रमुख जातियाँ हैं और अन्य जातियों को मौसमिक पकड में या आकस्मिक पकड में मिल जाता है। *परापेनिअस फिसुरोइडस इंडिकस* की भारतीय तट से पहली बार पकड हुई। कर्नाटक के सोलेनोसीरा कुटुम्ब में मध्य शेल्फ की जातियाँ (*सोलेनोसीरा चोप्रै* और *एस. पेक्टिनेटा*) और गमीर सागर की जाति (*एस. हेक्स्टी*) मौजूद है। *एच.चोप्रै* वाणिज्यिक ढंग से प्रमुख जाति है और मांगलूर और माल्प के समुद्र के 60 से 100 मी. की गहराई से इन्हें पकडा जाता है। गभीर सागर से प्राप्त अन्य वर्ग अरिस्टिडे वाणिज्यिक प्रमुख कुटुम्ब है जिसके अंदर आनेवाली प्रमुख जाति है. रेड रिंग्स. नाम से जानने वाला *अरिस्टियस अलोकी*। इसे मांगलूर -कुन्दापूर क्षेत्र के समुद्र के 150 से 500 मीटर की गहराई से अधिक मात्रा में पकडा जाता है। इस मत्स्यन तल से पान्डालिडे कुटुम्ब की 6 जाति चिंगटों को भी पकडा गया जिन में *हेटेरोकार्पस गिब्बोसस* अधिक मात्रा में उपलब्ध था और अन्य जातियाँ विरल मात्रा में उपलब्ध थी। सेर्जेस्टिडे कुटुम्ब में आनेवाली 'जावाल चिंगट' *असेटस* जाति इस तट पर व्यापक रूप से फैली हुई है और मौसम में इनकी अच्छी मात्स्यिकी है। ये चिंगट अधिकांश मांसाहारी मछलियों और अन्य समुद्री जीवों का प्रमुख आहार है। नेत्रानी द्वीप से संग्रहित रिन्कोसिनेटिडे कुटुम्ब की *रिन्कोसिनेटस डबानेन्सिस* इस तट की पकड में पहली बार आती है। यह अंतर्राष्ट्रीय बाज़ारों में बडी मांग होने वाली वाणिज्यिक अलंकारी मछली जाति है।

परिणाम एवं चर्चा

कर्नाटक के 8 नदीमुखों से 4 कुटुम्बों की 17 जाति चिंगटों का संग्रहण किया गया और इन चिंगटों के वितरण का विवरण चित्र 1 में दिया जाता है। समुद्री चिंगट मात्स्यिकी कुल 8 कुटुम्बों की 33 चिंगट जातियों से युक्त है। इनमें पेनिआइडे सबसे बडा कुटुम्ब है जिस में 16 चिंगट जातियाँ मौजूद हैं। इस कुटुम्ब की सभी चिंगट जातियों को 50 मीटर की गहराई मेखला से संग्रहित किया गया और सभी वाणिज्यिक प्रमुख है। *मेटापेनिअस डोबसोनी, एम. मोनोसिस, एम. अफिनिस फेन्नरोपेनिअस (पेनिअस) इंडिकस, एफ. मेरगुएन्सिस, पेनिअस मोनोडोन, पी. सेमीसलकेटस, मेलिसेरटस कनालिकुलेटस, परापेनियोप्सिस स्टाइलिफेश और ट्रकिसलाम्ब्रिया*